* शिक्षा (Education) *

अर्थ : शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल की विधि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है शिक्षा आजीवन चलने वाली एक व्यापक प्रक्रिया है, यह उन सभी योग्यताओं, अनुभवों और शक्तियों का विकास है जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण होता है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति समुन्नत होता है तथा उसके जीवन में पूर्णता आती है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ : शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से बना है शिक्षा शब्द का ही तद्भव रूप सीख है जिसका अर्थ उपदेश देना या सीखना है। अतः शिक्षा का अर्थ दोनों ही रूपों में प्रयुक्त किया जाता है। सीखना एवं सिखाना, शिक्षा तथा विद्या दोनों ही शिक्षा के अर्थ में निहित होते हैं।

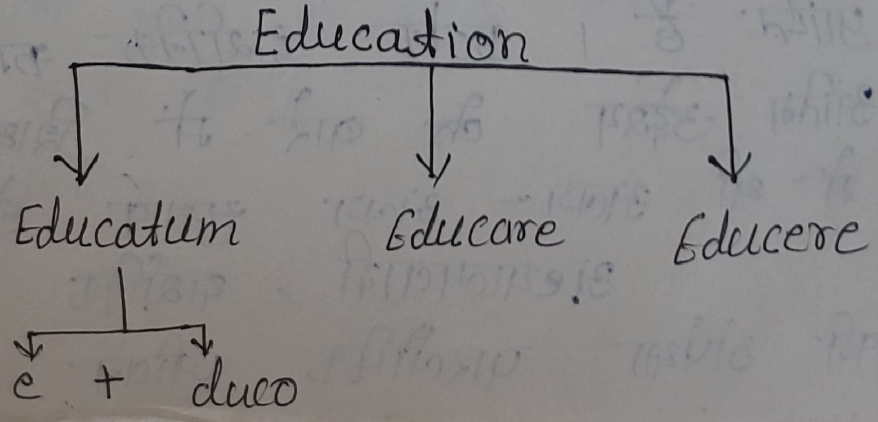

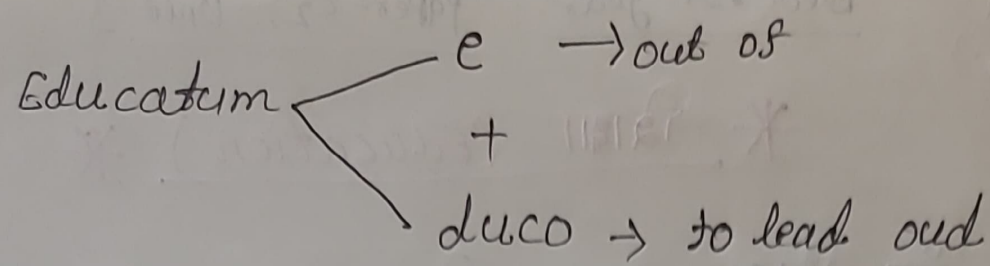

i) Educatum :— प्रशिक्षण देना, शिक्षण या प्रशिक्षण

ii) Educare :— शिक्षित करना या विकसित करना।

iii) Educere :— बाहर निकालना या आगे बढ़ाना

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि लैटिन शब्द Educatum एवं Educare के अनुसार शिक्षा कुछ ऐसी चीज है जो बाहर से प्रदान की जाए। जबकि इस Educere के अनुसार ये अंदर का विकास है इसलिए यह माना गया ~~है~~ है कि बच्चे से अच्छा ज्ञान निकालने के लिए उसको अच्छा ज्ञान या अनुभव प्रदान करें।

इस प्रकार शिक्षा के मायने ज्ञान तथा अनुभव को हासिल करना एवं व्यक्तिगत गुणों निपुणताओं तथा क्षमताओं का विकास करना है।

शिक्षा का दार्शनिक अर्थ :—

दार्शनिक दृष्टिकोण से शिक्षा मानव जाति के आंतरिक उद्देश्यों की प्राप्ति है। प्रत्येक दार्शनिक का जीवन के अंतिम उद्देश्य के बारे में शिक्षा के मत में भी अलग-अलग सुझाव होता है।

अध्यात्मवादी, दार्शनिक लौकिक जीवन की अपेक्षा पारलौकिक जीवन को अत्यधिक

महत्वपूर्ण मानते है। इस लौकिक जीवन से सदैव के लिए छुटकारा पाने को वे मुक्ति कहते है।

जगतगुरु शंकराचार्य के अनुसार,

"सा विद्या या विमुक्ते"

अर्थात शिक्षा वह है जो मुक्ति प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार – "मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है"

अरस्तु के अनुसार – "शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार – "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है - बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क तथा आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का सर्वोत्तम विकास।"

टैगोर के अनुसार – "उच्चतम शिक्षा वह है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।

शिक्षा की प्रकृति

शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। अतः शिक्षा की प्रकृति में निम्नलिखित बिंदुओं को सम्मिलित कर स्पष्ट किया जा सकता है:-

1.) शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है :- शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते समाज का एक अभिन्न अंग है। मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन व शिक्षा दोनों ही सामाजिक प्रक्रिया के रूप में होती है। सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार ही बच्चे के विचारों तथा व्यवहार में परिवर्तन आता है शिक्षा के द्वारा ही बच्चों की सामाजिक विकास संभव है

2.) शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है —

समय के अनुसार शिक्षा में भी परिवर्तन होता रहता है। शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन होते रहते हैं। तात और शिक्षा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर बढ़ती रहती है शिक्षा की गतिशीलता के कारण ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं। यही शिक्षा की गतिशीलता है।

3. शिक्षा सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया —

शिक्षा का कार्य बालक की कुछ क्षमताओं का विकास करना

ही नहीं है। बल्कि बालक के सभी पक्षों का (ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक) विकास करना है।

4) शिक्षा समायोजन की प्रक्रिया है :-

प्रत्येक बालक के व्यवहार जन्मजात तथा प्रकृति प्रदत्त होते हैं, फलतः उनमें नियोजन संगठन तथा व्यवस्था का व्यवहारों को समाजोपयोगी बनाया जाता है तथा उनमें व्यवस्था व प्रणाली को सम्मिलित किया जाता है।

5. शिक्षा अनुभवों का सतत पुनर्गठन है :-

बालक अपने दैनिक जीवन में अनुभव प्राप्त करता है तथा इन अनुभवों के द्वारा अपने व्यवहारों का परिमार्जन कर लेता है और नई - नई क्षमताओं से कौशलों का विकास कर लेता है।

6. शिक्षा द्विमुखी प्रक्रिया है :- शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक तथा शिक्षार्थी दो साझीदार है एक योग्य शिक्षक वही है जो बालक की व्यक्तित्व में अपनी व्यक्तित्व का मिलान कर दे। जिससे बालक की सहज प्रकृति एवं क्रमिक विकास का लक्ष्य अर्जित किया जाता है।

शिक्षक $\xrightarrow{\text{शिक्षा}}$ शिक्षार्थी

इस प्रक्रिया में शिक्षक का उद्देश्य शिक्षार्थी का विकास करना है।

6

7. शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है :

हम जानते है कि शिक्षा सामाजिक परिवेश में ही संपन्न होती है। व्यक्ति का सम्पूर्ण परिवेश ही उसकी शिक्षा का स्रोत बन जाता है। शिक्षक अपनी समझ से सामाजिक परिवेश के अनुरूप शैक्षिक अनुभवों की रूपरेखा तैयार करता है।

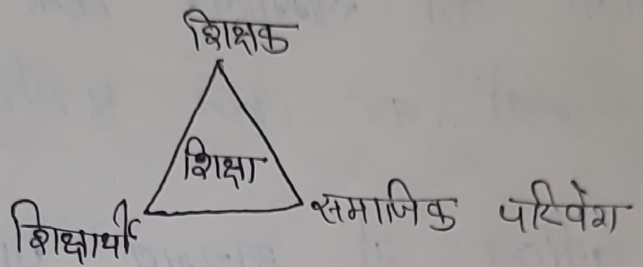

शिक्षा का महत्व

शिक्षा का महत्व अनेक दृष्टियों से है इसका कार्य क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अंतर्गत यह सभी कार्य आ जाते है। जिनको पूरा करने में व्यक्ति अपने जीवन को सुखी तथा सफल बनाने हेतु समाजिक कार्यों को उचित समय पर पूरा करने के योग्य बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सामान्य रूप से शिक्षा व्यक्ति के मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण तथा शोधन करते हुए उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास करने में इस प्रकार सहायता प्रदान करता है कि उसका सर्वांगीण विकास हो जाए यही नहीं शिक्षा व्यक्ति में चारित्रिक तथा नैतिक गुणों एवं सामाजिक भावनाओं को विकसित करके उसे ~~प्रभा~~

प्रौढ़ जीवन के लिए इस प्रकार तैयार करती है कि वह अपनी संस्कृति तथा सभ्यता का संरक्षण करते हुए उत्तम नागरिक के रूप में सामाजिक सुधार करके राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाय।

शिक्षा मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहाँ एक ओर वातावरण से अनुकूलन करने तथा उसमें आवश्यकता अनुसार परिवर्तन करते हुए भौतिक संपन्नता को प्राप्त करके चरित्रवान बुद्धिमान बुद्धिमान, वीर तथा साहसी एवं उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सर्वांगीण विकास करती है। वही दूसरी ओर शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति के अंतर्राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, सामाजिक सुवासता तथा राष्ट्रीय अनुशासन उनकी भावनाओं को विकसित करके उसे उसकी योग्यता देती है कि वह सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने के लिए तैयार हो जाता है।

निष्कर्ष :-

उपयुक्त विवेचना से स्पष्ट है कि शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है तथा उसे अपने समाज के लिए एक सभ्य एवं योग्य नागरिक बनाती है अतः शिक्षा जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।